MT

Seat No. | | | | | | | |

2018 1100

MT - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - II - PAPER - III

Time : 3 Hours **Preliminary Model Answer Paper** **Max. Marks : 100**

विभाग 1 - गद्य

उ.1.	**(क) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।**	**(8)**
(1)	(i) **किसने, किससे कहा?** एक व्यक्ति ने लेखक से कहा।	½
	(ii) **उत्तर लिखिए ।** लेखक के दिमाग में एक नए मुहावरे का जन्म हुआ।	½
	(iii) **निम्नलिखित गलत वाक्य सही करके लिखिए।** (1) लेखक को सार्वजनिक अस्पताल में भरती करवाया गया था। (2) लेखक की एक टाँग सही सलामत थी।	1
(2)	**वाक्यों का उचित क्रम लगाकर वाक्य फिर से लिखिए।** (i) लेखक को अस्पताल में भरती करवाया गया था। (ii) किसी ने लेखक से न घबराने के लिए कहा। (iii) लेखक ने 'टाँग का टूटना' यह मुहावरा गढ़ा। (iv) लेखक के अनुसार टाँग टूटना मात्र एक घटना है।	**2**
(3)	**(i) गद्यांश में से विदेशी शब्द ढूँढ़कर लिखिए।** प्राइवेट, वार्ड, ऐक्सिडेंट, फ्रैक्चर, स्टैंड	**1**
	(ii) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए। (1) सार्वजनिक (2) अस्पताल	**1**
(4)	आज कोई भी व्यक्ति सार्वजनिक अस्पताल में भरती होना पसंद नहीं करता। सार्वजनिक अस्पताल में भले ही मुफ्त में इलाज होता है; दवाइयाँ भी मुफ्त में मिलती हैं, फिर भी लोगों की मानसिकता प्राइवेट अस्पताल में भरती होने की ही हो गई है। आखिर बात ही वैसी है। सार्वजनिक अस्पताल में काम करने वाले डॉक्टर एवं नर्सेस ठीक से मरीजों की देखभाल नहीं कर पाते हैं। इसका कारण मरीज़ों की संख्या में बेहताशा वृद्धि भी है। दूसरा कारण, लोग सरकारी या सार्वजनिक अस्पताल में विश्वास नहीं करते। बहुत सारे लोग प्रतिष्ठावश सार्वजनिक अस्पतालों में भरती होना पसंद नहीं करते।	**2**

उ.1.	**(ख) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।**	**(8)**
(1)	**(i) समझकर लिखिए।**	**1**
	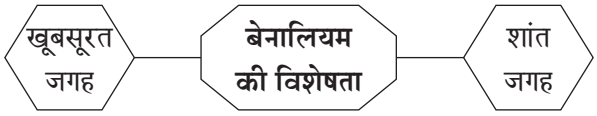	
	(ii) कृति पूर्ण कीजिए।	**1**
	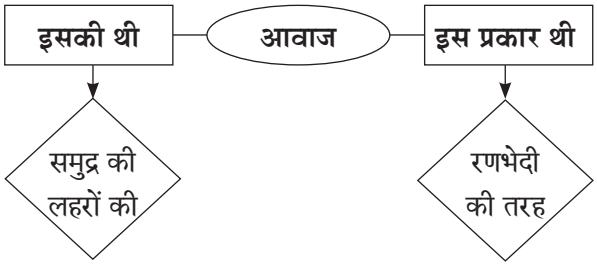	
(2)	**(i) कारण लिखिए।**	
	(1) रेत पर तेजी से दौड़ना मुश्किल हो रहा था क्योंकि **पैर रेती में धँस जा रहे थे।**	½
	(2) लेखक समुद्र से लिपट गया क्योंकि **समुद्र खूबसूरत दिखाई दे रहा था।**	½
	(ii) वाक्य पूर्ण कीजिए।	
	(1) जीवन में तब तक कोई भी काम असंभव नहीं होता **जब तक जीवन में आशावाद हो।**	½
	(2) लेखक सपरिवार दौड़ पड़े, क्योंकि **अचानक समुद्र के लहरों की आवाज रणभेदी की तरह सुनाई दी।**	½
(3)	**(i) वचन बदलिए।**	**1**
	(1) बच्चा - बच्चे (2) सड़क - सड़कें	
	(ii) निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए।	**1**
	(1) सत्य - सच (2) दिवस - दिन	
(4)	'आशा' मानव जीवन को मिला एक वरदान है। व्यक्ति आशा के सहारे ही जीवित रहता है। 'आज नहीं तो कल अच्छा होगा', यह आशा मानव-हृदय में विराजमान होती है। इसी आशा के सहारे मनुष्य ने आज प्रगति कर ली है। वह चाँद पर जाकर आया है। अब उसे मंगल पर जाने की आशा है। यदि आशा नहीं होती तो मानव अपने जीवन में प्रगति नहीं कर सकता था। आशा ही मनुष्य के जीवन में इच्छा एवं जिज्ञासा का निर्माण करती रही है। व्यक्ति जीवन में कई बार निराश हो जाता है; असफल होता है, फिर भी वह कोशिश करता रहता है। उसे फिर से कोशिश करने की शक्ति आशा ही प्रदान करती है और अंत में व्यक्ति अपना निर्धारित लक्ष्य पा लेता है।	**2**

उ.1.	**(ग) अपठित परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**	**(8)**
(1)	**आकृति पूर्ण कीजिए।**	
	(i) 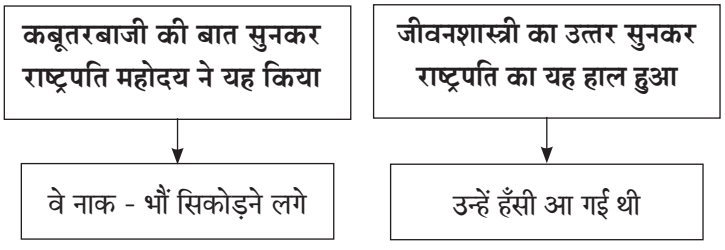	**1**
	(ii) 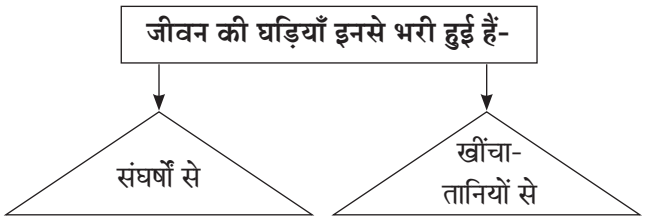	**1**
(2)	**(i) समझकर लिखिए।**	**1**
	(1) बाज़ार। (2) कबूतरबाजी का मैच ।	
	(ii) उपर्युक्त गद्यांश से दो ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हो।	**1**
	(1) राष्ट्रपतिभवन - विदेशी विद्वान कहाँ पहुँच गए ?	
	(2) सेक्रेटरी - जीवनशास्त्री के घर उन्हें बुलाने राष्ट्रपति का कौन सा अधिकारी गया ?	
(3)	**(i) गद्यांश में आए विरुद्धार्थी शब्द है ।**	**1**
	(1) बढ़िया × घटिया (2) जरूरी × बेजरूरी	
	(ii) समानार्थी शब्द लिखिए ।	**1**
	(1) लापता - गायब (2) आनंद - खुशी	
(4)	कुछ लोग मनोरंजन को अर्थहीन और समय की बरबादी समझते हैं । परंतु यह उनकी नासमझी है । सच तो यह है कि मनोरंजन से मनुष्य का मन आनंद से भर जाता है । जीवन में मनोरंजन न होने पर स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ता है । जिंदगी आनंदमय हो इसके लिए मनोरंजन जरूरी है । इसलिए उचित समय पर आनंद लेते रहना चाहिए ।'	**2**
	विभाग 2 - पद्य	
उ.2.	**(च) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**	**(6)**
(1)	**समझकर लिखिए।**	**1**
	(i) मर्यादा का। (ii) सीप में।	
(2)	**(i) निम्नलिखित शब्द पढ़कर ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों ।**	**1**
	(1) गजलकार किसमें शक्ल ढूँढ़ रहा है ?	
	(2) खिले हुए फूल पर किसके पर टूट जाते हैं ?	

	(ii) उचित जोड़ियाँ मिलाइए। (i - ख), (ii - घ), (iii - क), (iv - ग)	**2**
(3)	**निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।** गजलकार कहते हैं, ''यदि नाजुक कली फूल बनने से डर जाए, तो वह सुंदर फूल का रूप धारण नहीं कर सकती। उसी प्रकार व्यक्ति को भी विपरीत परिस्थिति में डरना नहीं चाहिए। यदि वह भयभीत हुआ तो वह सफलता हासिल नहीं कर सकता। व्यक्ति को खिले हुए फूल पर तितली के टूटे हुए पंखों की भाँति मँडराना चाहिए। इसका अर्थ यह है, भले ही व्यक्ति जीवन में असफल हो; फिर भी उसे अपने मन में धैर्य रखकर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। संघर्ष के साथ जूझते हुए व्यक्ति को आगे बढ़ना चाहिए।''	**2**
उ.2.	**(छ) निम्न मुद्दों के आधार पर निम्न कविता का पद्य विश्लेषण कीजिए:**	**(6)**
(i)	**भारत महिमा**	
	(1) **रचनाकार का नाम:** जयशंकर प्रसाद	**1**
	(2) **रचना का प्रकार** : छायावादी आधुनिक काव्य	**1**
	(3) **पसंदीदा पंक्ति** : हिमालय के आँगन में उसे, किरणों का दे उपहार; उषा ने अभिनंदन किया, और पहनाया हीरक हार।	**1**
	(4) **पसंदीदा होने का कारण:** सूर्योदय होने से कुछ पल पहले उषा रूपी किरणों का हिमालय के आँगन में आगमन हुआ। भारत देश में उदित होने वाली उषा अपने साथ सुनहरी किरणों को लेकर आई। मानो वह भारत का अभिनंदन कर उसे हीरों का हार पहना रही हो। इसमें कवि ने मानवीकरण अलंकार के माध्यम से भारत की प्राकृतिक सुषमा का जो मनोहारी वर्णन किया है, वह अद्‌भुत व अतुलनीय है। अत: यह पंक्तियाँ मुझे अत्यंत प्रिय हैं।	**2**
	(5) **कविता से प्राप्त संदेश या प्रेरणा:** इस कविता से हमें यह संदेश प्राप्त होता है कि हमें अपने अतीत के गौरवशाली इतिहास को कभी नहीं भूलना चाहिए। हमें अपने देश पर गर्व होना चाहिए और इस पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।	**1**
	अथवा	
(ii)	**गिरिधर नागर**	
	(1) **रचनाकार का नाम:** मीराबाई	**1**
	(2) **रचना का प्रकार** : पद	**1**
	(3) **पसंदीदा पंक्ति** : हरि बिन कूण गती मेरी।। तुम मेरे प्रतिपाल कहिये मैं रावरी चेरी।। आदि-अंत निज नाँव तेरो हीमायें फेरी। बेर-बेर पुकार कहूँ प्रभु आरति है तेरी।।	**1**

	(4) **पसंदीदा होने का कारण :** उपर्युक्त पंक्ति में कवयित्री मीराबाई ने कृष्ण के प्रति समर्पण की भावना को दर्शाया है उन्होंने कहा है कि कृष्ण हमारे पालनकर्ता और मै उनकी दासी हूँ। मैं जीवन के अंतकाल तक आपका नाम जपती रहूँगी। इसलिए यह पंक्ति मुझे बेहद पसंद है।	**2**
	(5) **कविता से प्राप्त संदेश या प्रेरणा :** इस पंक्ति से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि ईश्वर ही हम सब के पालनहार है। उनके बिना हमारा कोई अस्तित्व नहीं है। हम सुख के समय ईश्वर को भूल जाते हैं और जब हमारे ऊपर दु:ख आता है तब हम ईश्वर को पुकारने लगते हैं। जबकि हमें हर परिस्थिति में ईश्वर को याद करते रहना चाहिए।	**1**
उ.2.	**(ज) अपठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**	**(6)**
(1)	**उत्तर लिखिए।** (i) विषाद की निशा बीत रही है। (ii) प्रयाण की दिशा दिखने लगी है।	**½**
(2)	**समझकर लिखिए।** (i) किसकी निशा बीत रही है ? (ii) कौन-सी दिशा दिखने लगी है ?	**1**
(3)	**(i) कविता में लय और संगीत निर्माण करने वाले शब्दों की जोड़ियाँ लिखिए।** (1) विहान - गान (2) निशा - दिशा	**1**
	(ii) विरुद्धार्थी शब्द लिखिए। (1) विषाद × हर्ष (2) निशा × उषा	**1**
(4)	**निम्नलिखित अपठित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।** कवि का कहना है कि अब नई सुबह हुई है। दुख-दर्द की रातें समाप्त हो गई हैं। सुख और प्रसन्नता से भरी दिशाएँ दिखाई देने लगी हैं। अब हमें उस माहौल में जाना है, जहाँ निर्भयता हो।	**2**
	विभाग 3 - पूरक पठन	
उ.3.	**(अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**	**(4)**
(1)	**(i) समझकर लिखिए।** 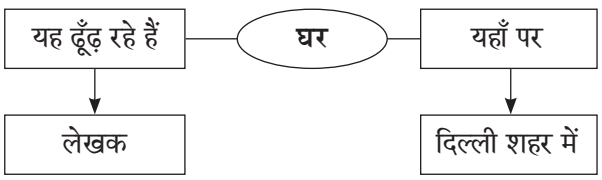 	**1**

	(ii) लेखक ने दिल्ली शहर की तुलना इस वाहन से की है - **बस से**	1
(2)	प्रत्येक व्यक्ति के कुछ शौक होते हैं। शौक हमें आनंद देते हैं। शौकीन होने से हमें ऊब नहीं होती। इससे काम के प्रति हमारा उत्साह बना रहता है। व्यक्ति को जिस चीज का शौक होता है, उसके लिए वह समय निकाल लेता है। चाहे व्यक्ति कितना भी व्यस्त क्यों न रहें, फिर भी वह अपने शौक की खातिर समय निकाल ही लेता है। जिसे पुस्तकें पढ़ने का शौक होता है, वह वक्त निकालकर पुस्तकालय में जाकर किताबें पढ़ता है या फिर हर महीने नई-नई किताबें खरीदता है। कहते भी हैं - जहाँ चाह, वहाँ राह होती है। बच्चों को खेलने का शौक होता है, अत: वह अपनी पढ़ाई पूरी करके दिन में दो तीन घंटे का समय खेल के लिए जैसे-तैसे निकाल लेते हैं। इस प्रकार जो हम शौक से करना चाहते हैं, उसके लिए मार्ग निकाल लेते हैं।	2
उ.3.	**(आ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**	
(1)	**(i) निम्नलिखित शब्द पढ़कर ऐसे दो शब्द तैयार कीजिए कि जिनके उत्तर निम्न शब्द हों।** (1) मन की पीड़ा क्या बनकर छा जाती है? (2) विषाद चले जाने से मन कैसा बनता है?	1
	(ii) निम्नलिखित हाइकु द्वारा मिलने वाला संदेश लिखिए। जिसको जीवन मिलता है, उसकी मृत्यु भी तो निश्चित होती है। फिर भी व्यक्ति को जीवन के प्रति आसक्ति (जीने की इच्छा)होती है।	1
(2)	मृत्यु जीवन का अटल सत्य है। गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है कि जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु निश्चित है। एक दिन सभी को मरना है । हम चाहकर भी मृत्यु का निवारण नहीं कर सकते, अपितु कुछ समय के लिए मृत्यु को कुछ पीछे धकेला जा सकता है। इसके लिए हमें अपनी दिनचर्या में आसन, व्यायाम, प्राणायाम आदि का समावेश करना पड़ेगा। हमें संतुलित मात्रा में भोजन लेना पड़ेगा। एक दिन मृत्यु होने वाली है, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमें जीवन में अच्छा काम करना चाहिए। अपना जीवन दूसरों की भलाई के लिए समर्पित करना चाहिए। यदि हम ऐसा कर सकें, तो मृत्यु के पश्चात भी हम अमर हो सकते हैं।	2
	विभाग 4 - व्याकरण	
उ.4.	**सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**	
(1)	**(i) निम्नलिखित वाक्य में आए हुए संज्ञा शब्दों को रेखांकित करके उनके भेद लिखिए।** गाय : जातिवाचक संज्ञा दूध : द्रव्यवाचक संज्ञा	1
	(ii) निम्नलिखित वाक्य के रिक्त स्थानों में उचित सर्वनाम का प्रयोग कीजिए। इसे लेकर <u>तुम</u> क्या करोगे?	1
(2)	**(i) निम्नलिखित वाक्य में से अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए।** **और** : समुच्चयबोधक अव्यय	1

(ii) **निम्नलिखित अव्यय शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए।** 1

वाक्य - काश! तुम भी हमारे साथ चलते।

(3) काल परिवर्तन कीजिए।

(i) सातों तारे मंद पड़ जा रहे हैं। 1

(ii) मैं खिड़की से गरदन निकालकर झिड़की के स्वर में कह रहा था। 1

(4) तालिका पूर्ण लिखिए । 2

संधि	संधि-विच्छेद	भेद
महात्मा	महा + आत्मा	स्वर संधि
नमस्ते	नम: + ते	विसर्ग संधि

(5) (i) रचना के आधार पर निम्न वाक्य के भेद पहचानिए। 1

मोटे तौर पर दो वर्ग किए जा सकते हैं। (सरल वाक्य)

(ii) सूचना के अनुसार निम्न वाक्य का प्रकार बदलिए 1

तुम अपना ख्याल रखो।

(6) (i) मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए। 1

टाँग अड़ाना : अड़ंगा डालना

वाक्य: यदि तुम मेरे काम में **टाँग अड़ाने की** कोशिश करोगे तो मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।

(ii) निम्न वाक्यों में अधोरेखांकित शब्द समूह के लिए कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए। 1

पंडित बुद्धिराम काकी को देखते ही **तिलमिला गए।**

(7) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके फिर से लिखिए।

(i) सिरचन को कोई लड़के-बच्चे नहीं थे। 1

(ii) लक्ष्मी की पूँछ झूब्बेदार थी। 1

(8) निम्न वाक्यों में से मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया पहचानकर लिखिए। 1

मुख्य क्रिया - रुठना सहायक क्रिया - गई (जाना)

(9) निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए। 1

अ.क्र	क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
(i)	खाना	खिलाना	खिलवाना
(ii)	फैलना	फैलाना	फैलवाना

(10) निम्नलिखित वाक्यों में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग कर वाक्य पुन: लिखिए। 1

मैंने कराहते हुए पूछा, ''मैं कहाँ हूँ?''

(11)	**निम्नलिखित वाक्य के रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित कारक चिह्नों से कीजिए और कारक का नाम लिखिए।** कितने दिनों **की** छुट्टियाँ हैं। **की** - संबंध कारक	1
	विभाग 5 - रचना विभाग	
उ.5. (i)	(अ) दिनांक - १८ मार्च, २०१८ सेवा में, श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी जी, नगर परिषद, थाना। **विषय** : मुहल्ले की गंदगी के संबंध में शिकायत पत्र। माननीय महोदय, मैं आपके शहर का एक निवासी हूँ। इस पत्र के द्वारा मैं आपका ध्यान शहर में फैली गंदगी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। पिछले कुछ दिनों से मुहल्ले में गंदगी ज्यादा ही बढ़ गई। कचरे के डिब्बे में भरा कचरा सड़ रहा है। अंदर से ज्यादा कचरा बाहर पड़ा हुआ है। एक तो सफाई कर्मचारी नियमित आते नहीं और आते भी हैं तो बाहर का कचरा छोड़ देते हैं। चारों तरफ बदबू फैल रही ही। मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है। लोग भयंकर बीमारी के शिकार हो रहे हैं। अत: आपसे प्रार्थना है कि नागरिकों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए शीघ्र ही उचित कार्यवाही करने की कृपा करें। कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। धन्यवाद! भवदीय, प्रेम वर्मा। नाम : प्रेम वर्मा पता : ४/सी रूप दर्शन, रामपुर, थाना। ई-मेल आईडी : prem@gmail.com	5
	अथवा	
(ii)	दिनांक - २४ दिसंबर, २०१७ प्रिय इंदुभूषण स्नेह!	5

	१ जनवरी, २०१७ से शुरू होने वाला यह नया वर्ष तुम्हारे जीवन में सुख-समृद्धि की वर्षा करे। तुम्हारा जीवन खुशियों से भर जाए। मेरी शुभकामना स्वीकार करो। धन्यवाद! तुम्हारा, पवन शर्मा नाम : पवन शर्मा पता : १८२ निर्मल पार्क, गाँधी नगर, पटना ई-मेल आईडी : pawan123@gmail.com	
(2)	(i) आदमी को किस तरह रास्ते पर लाया जा सकता है? (ii) चतुर वक्ता अपने भाषण का प्रारंभ रोचक कहानी या घटना से क्यों करता है? (iii) समाज में हँसी और व्यंग्य का क्या उपयोग होता है? (iv) हास्य का चाबुक कौन-सा विशेष कार्य करता है? (v) रूढ़ियों को निष्कासित करने में कौन सहायता नहीं करता है?	
उ.6.		
(1)	**वृत्तांत लेखन ।** दिनांक ४ दिसंबर, २०१८ : मुंबई : कला विद्यालय, मुंबई में 'अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस' का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर प्रमुख अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध समाजसेवी, नोबेल पुरस्कार प्राप्त श्रीमान कैलाश सत्यार्थी जी को आमंत्रित किया गया था। सुबह ९.३० बजे कार्यक्रम शुरू हुआ था। विद्यालय के विद्यार्थी प्रमुख कुमार विजय ने पुष्पगुच्छ भेंट करके मुख्य अतिथि महोदय जी का सत्कार किया। स्कूल के प्रधानाचार्य श्री योगेश दत्त जी ने 'अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस' के अवसर पर सभी को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक वर्ष ३ दिसंबर को यह दिन संपूर्ण विश्व में मनाया जाता है। अतिथि महोदय जी ने भी अपने वक्तव्य में 'अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस' का महत्त्व बताया। उन्होंने दिव्यांगों के प्रति सामाजिक भेदभाव को मिटाने और उनके जीवन को और बेहतर बनाने के लिए सभी को एकत्रित होकर इस दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने 'दिव्यांग' इस विषय पर भावनात्मक नाटक का आयोजन कर सभी को भावविह्वल कर दिया। विद्यालय के कुछ छात्रों ने नृत्य व नाटिका प्रस्तुत कर दर्शकों की खूब वाह-वाही बटोरी कक्षा दसवीं की एक छात्रा ने अपने भाषण में इस अंतर्राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर समाज में दिव्यांगों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए इस दिन को बड़े पैमाने पर मनाने के लिए सभी को एकत्रित होने की बात को प्रभावपूर्ण तरीके प्रस्तुत किया। अंत में विद्यालय के प्रधानाध्यापक जी ने सभी को हार्दिक बधाई देते हुए सबका धन्यवाद किया। इस प्रकार सुबह ११ बजे कार्यक्रम का समापन हुआ।	**5**

(2) **निम्न मुद्दों के आधार पर विज्ञापन तैयार कीजिए।** **5**

''आई-आई आइस्क्रीम आई, शीतल-शीतल 'ठंडक' लाई!''

अनूठे स्वादों से भरपूर

₹ २०

'ठंडक बच्चों को भाए
बड़े-बूढ़ों को ललचाए!'
मीठा स्वाद और मीठी महक
खाते ही आप महसूस करेंगे
कुछ ठंडा-ठंडा कूल-कूल
पैक का मूल्य सभी जगह उपलब्ध

अनमोल प्रॉडक्ट, मुंबई

(3) **झूठ का परिणाम** **5**

लखनपुर नामक गाँव में राजू नाम का एक शरारती चरवाहा रहता था। वह भेड़-बकरी चराने का काम करता था। उसे झूठ बोलने की आदत थी। एक दिन वह भेड़-बकरी चरा रहा था। उसी समय अचानक उसके मन में एक शरारत करने का विचार आया। वह पेड़ पर चढ़कर चिल्लाने लगा, 'शेर आया, मुझे बचाओ।'

आस-पास खेतों में काम करनेवाले किसान दौड़ते हुए उसे बचाने के लिए आए। वे इधर-उधर देखने लगे, उन्हें कहीं भी शेर नजर नहीं आया। उन्हें इस तरह अचंभित देख पेड़ पर बैठा राजू जोर-जोर से हँसने लगा। किसान अपना-सा मुँह लिए चले गए। कुछ दिन के बाद फिर राजू ने यह शरारत दोबारा की। किसान फिर आए और दुखी होकर चले गए।

इस तरह राजू ने कई बार अपनी शरारत से लोगों को तंग किया। एक दिन सचमुच शेर आ गया। वह मारे भय के जोर से चिल्लाने लगा, 'बचाओ... बचाओ, शेर आया.... शेर आया।'

लेकिन इस बार कोई किसान उसकी मदद के लिए नहीं आया। शेर राजू को मार कर खा गया। उसे झूठ बोलने का फल मिल गया।

सीख: इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा सच बोलना चाहिए।

(4)(i) **किसी पालतू प्राणी की आत्मकथा लिखिए।** **7**

''ठहरिए, कहाँ जा रहे हो? तनिक रुककर मेरी कहानी सुनिए। मैं हूँ तकदीर का मारा, बेचारा, वृद्ध जानवर। मैं एक अल्सेसिशयन प्रजाति का कुत्ता हूँ। मैं भारत में इटली से आया था। उस वक्त मैं बहुत छोटा था। दरअसल मुझे कुछ लोगों ने मेरे माँ-बाप से अलग कर भारत में बेचने के लिए भेजा था। जब मुझे भारत में लाया जा रहा था तब मैं बहुत दुखी था मुझे बार-बार अपने माता-पिता की याद आ रही थी; लेकिन मेरा दुखड़ा कौन सुनता?

प्राणियों की एक बड़ी दुकान में मुझे बेचने के लिए रखा गया। मेरी कीमत भी अधिक थी। हर दिन कई लोग आते व मुझे देखते रहते। एक दिन एक अमीर आदमी दुकान में आया और उसने मुझे खरीद लिया। वह मुझे अपने घर ले गया। उसका घर क्या था ? बहुत ही बड़ा बंगला था उसका। उसके घर में ढेर सारे नौकर थे। मेरे लिए एक अलग कमरे की व्यवस्था की गई। उसका एक बेटा था। वह मुझे देखकर बहुत ही खुश हुआ और मेरे साथ खेलने लगा। जल्द ही हम दोनों बहुत अच्छे दोस्त बन गए। आहिस्ता-आहिस्ता मैं अपने माता-पिता को भूल गया और उस संपन्न घर में बड़े ही आराम से रहने लगा।

समय अपनी अबाध गति से बीतता रहा। मैं बड़ा हो गया। मैं उनके घर की रखवाली करने लगा। मेरे होते हुए किसी की क्या मजाल कि कोई किसी चीज को छू ले। यहाँ तक कि घर के सारे नौकर भी मुझसे डरते थे। मेरे लिए खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी। दिन में चार बार मुझे खाने के लिए अच्छी-अच्छी चीजें दी जाती थीं। मैं भी भरपेट खाना खाता था और बंगले में चारों ओर स्वच्छंद विचरण करता रहता था। घर के सभी सदस्य मुझसे बहुत प्यार करते थे। मुझे ऐसा लगने लगा था कि मानो, मेरे मन की मुराद पूरी हो गई हो।

वृद्धावस्था से क्या कोई निजात पा सकता है ? मैं भी वृद्ध हो गया। चलने-फिरने में असमर्थ हो गया। तब घर के सारे सदस्यों पर मैं बोझ बनने लगा। घर के लोग मुझे खाना तो देते थे, पर पहले जैसा प्यार नहीं करते थे; मुझे दुलारते नहीं थे। मैं बीमार रहने लगा। तब एक दिन घर के मालिक ने मुझे अपनी आलीशान कार में बिठाकर घर से दूर सड़क के एक किनारे छोड़ दिया। तब से मैं अकेला हो गया हूँ। अब मेरे पास जीवन जीने का कोई अर्थ नहीं रह गया है। यह इंसान कितना निर्दयी और स्वार्थी है। उसे जब अपना जी बहलाने के लिए किसी की जरूरत होती है; तब वह उसके लिए सब कुछ करने के लिए तैयार हो जाता है और जब उसका जी भर जाता है, तब वह उस चीज को अपने जीवन से दूर कर देता है। क्या खूब ! आखिर, यही होते हैं इंसान के जीवन के असली रंग। खैर कोई बात नहीं, जिस ईश्वर ने मुझे जन्म दिया है, आखिर वही मेरी हिफाजत करेगा।''

(ii) **मैं हिमालय बोल रहा हूँ.....** **7**

मेरे नगपति ! मेरे विशाल !
साकार, दिव्य, गौरव विराट् ,
पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल !
मेरी जननी के हिम-किरीट !
मेरे भारत के दिव्य भाल !
मेरे नगपति ! मेरे विशाल !

राष्ट्रकवि दिनकर की ये पंक्तियाँ मेरे ही सम्मान और श्रेष्ठता को स्थापित करती हैं। जी हाँ ! मैं संसार का सबसे ऊँचा पहाड़ हूँ। इसलिए तो मुझे नगपति व गिरिराज भी कहते हैं। मैं बर्फ का घर हूँ। मुझ पर हमेशा बर्फ जमी रहती है। मैं उत्तर भारत में सहस्त्रों मील तक फैला हुआ हूँ। आखिर भारत देश का दिव्य भाल हूँ। मेरी ऊँची चोटियाँ प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं। आदिकाल से मेरा महत्त्व है। भारतीय पुराणों में मेरा वर्णन किया गया है। पुराणों के अनुसार भगवान शंकर मेरे ही पर्वत 'कैलाश' पर निवास करते हैं। मेरे आँचल में बद्रीनाथ, केदारनाथ, अमरनाथ आदि प्रसिद्ध तीर्थस्थल हैं। यहाँ पर प्रतिवर्ष बहुत सारे लोग आते हैं। मेरा प्राकृतिक सौंदर्य देखने के लिए लाखों पर्यटक आते हैं।

पर्वतारोहियों के लिए मैं एक सुखद जगह हूँ। क्या आपको पता है, दुनिया के विभिन्न प्रदेशों से आए हुए, कई लोगों ने मेरे सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट की चढ़ाई की है। यदि मैं न होता तो देश के अधिकतर उत्तरी बाग में मरूभूमि होती। मैं मानसूनी हवाओं को रोककर रखता हूँ। इसी कारण उत्तर भारत में जोरों से वर्षा होती है। इसी कारण यहाँ की नदियाँ पानी से भरी होती है। ग्रीष्म के महीने में सूर्य की रोशनी के कारण मेरी चोटियों से बर्फ पिघलने लगती है और वह जल के रूप में नदियों से बहने लगती है।

मैं एक मनोरम रम्य स्थल हूँ। मेरे चारों ओर प्राकृतिक वैभव बिखरा हुआ है। देवदार व चीड़ जैसे ऊँचे-ऊँचे पेड़ मेरी शोभा बढ़ा रहे हैं। रंग-बिरंगे पक्षी व जानवर मेरी गोद में आनंद से रहते हैं। मेरे पास आयुर्वेद का भंडार है। विविध प्रकार की जड़ी-बूटियों का मेरे पास संग्रह है। मेरे वनों से लोगों को फल-फूल, लकड़ियाँ, गोंद आसानी से मिल जाते हैं। लोगों को कागज बनाने के लिए लुगदी भी मैं ही प्रदान करता हूँ।

इसी कारण महाकवि पंत जी लिखते हैं -

समाधिस्थ सौंदर्य हिमालय
आत्मानुभूति लय
हँसता जहाँ अशेष
ज्योतिर्भूमि जय भारत देश।

❖❖❖